ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

ऋषि दयानन्द

तिथि–10 अप्रैल 2017
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११८
युगाब्द-५११८, अंक-८४, वर्ष-९
फाल्गुन मास, विक्रमी २०७४(अप्रैल 2017)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत् ॥५॥ -ऋ० १। १। १। ५

व्याख्यान-(कविः) हे सर्वदृक्-सब को देखनेवाले! (क्रतुः) सब जगत् के जनक, (सत्यः) अविनाशी अर्थात् कभी जिसका नाश नहीं होता, (चित्रश्रवस्तमः) आश्चर्यश्रवणादि, आश्चर्यगुण, आश्चर्यशक्ति, आश्चर्यस्वरूप और अत्यन्त उत्तम आप हो। जिन आपके तुल्य वा आप से बड़ा कोई नहीं है। [(देवः)] हे जगदीश! (देवेभिः) दिव्य गुणों के सह वर्त्तमान हमारे हृदय में आप प्रकट हों, सब जगत् में भी प्रकाशित हों। जिससे हम और हमारा राज्य दिव्यगुणयुक्त हो। वह राज्य आप का ही है, हम तो केवल आप के पुत्र तथा भृत्यवत् हैं।।५।।

सम्पादकीय

'उद्यमेन ही सिद्धयन्ति कार्याणि'

हम सभी ने संस्कृत की यह सुप्रसिद्ध उक्ति सुनी तो होगी ही कि- उद्यम अर्थात् परिश्रम से ही कार्य सिद्धि अर्थात् सफलता प्राप्त होती है। सफलता का मूल मंत्र सृष्टि के प्रारम्भ से ही परिश्रम रहा है, जो कि वर्त्तमान में भी उतना ही आवश्यक है। हम अपने चारों ओर निष्पक्ष होकर देखें- सफल उद्योगपति हों, सफल वैज्ञानिक हों, सफल शिक्षक हों अथवा सफल राजनेता हों। सभी योजनाबद्ध कार्यप्रणाली एवं उत्कृष्ट परिश्रम के बल पर अपने-अपने क्षेत्र में शिखर पर पहुँचे हैं। साथ ही जब इसमें संगठित शक्ति को भी जोड़ दिया जाय तो फिर सफलता का निश्चय और भी सरलता से होता है। आईए देखते हैं कुछ घटनाओं को-

१. हमारे देश के सुप्रतिष्ठित विज्ञान संस्थान 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक नया इतिहास रचते हुए पी एस एल वी-सी ३७ से एक साथ 104 उपग्रह अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किये जो अब तक विश्वभर में कोई नहीं कर सका।

२. उत्तर प्रदेश विधान सभा परिणाम में भारतीय जनता पार्टी को 403 में 325 सीटें एवं उत्तराखन्ड में 70 में से 57 सीटें मिली, जो राजनैतिक क्षेत्र में एक आश्चर्य चकित करने वाला कीर्तिमान है, इसका तो अनुमान करना भी असम्भव था क्योंकि पाँच वर्ष पूर्व भाजपा उ० प्र० में 50 सीटें भी प्राप्त नहीं कर पायी थी, किन्तु जब सारी पार्टी संगठित हुई, योजनाबद्ध और उत्कृष्ट परिश्रम किया गया तो परिणाम सारे देश के सम्मुख है।

३. हरियाणा प्रान्त के कैथल जनपद में आयोजित 25-26 मार्च 2017 का 'आर्य प्रशिक्षण महासत्र' जिसमें एक साथ 600 से अधिक लोगों ने आर्य सिद्धान्तों को ग्रहण कर, यज्ञोपवित धारण कर समस्त कपोल-कल्पित धारणाओं का तिलांजलि दे दी और आर्यपथ पर अग्रसर हो गये।

आर्य! आर्याओं! यह तीनों घटनाएं एकदम भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से हैं, लेकिन तीनों ही भविष्य का निर्धारण करने वाली घटनाएं हैं। पहली दो घटनाओं पर देश भर में चर्चाएं लगातार चल रही हैं, अनेक पक्ष हमारे सामने आ रहे हैं। किन्तु अन्तिम तीसरी घटना पर हम सभी को विचार करना है कि जब हमारे बीच के अनेक लोग निराशा का भाव प्रदर्शित करने लगते हैं, कहने लगते हैं-

१. आर्य निर्माण से कैसे बात बनेगी?

२. यह 40-40, 50-50 लोगों को आर्य बनाते-बनाते तो जीवन ही बीत जाएगा?

३. हम तो अपने जीवन में 'आयावर्त्त' देख ही नहीं पायेगें?

४. दखो जी कोई नया चमत्कार करना पड़ेगा।

५. लोगों के पास समय नहीं है, सत्र को एक दिन का कर लिया जाय, कोई 2-3 घंटे का कार्यक्रम बनाया जाय, जिससे लोग जल्दी तैयार हो जायें।

६. यह सन्ध्या, उपासना, आत्मा-परमात्मा के विषयों को छोडकर राष्ट्र

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

के नाम पर लोग जल्दी जुड़ेंगे आदि-आदि।

कैथल में आयोजित महासत्र से ऐसे सभी लोगों को उत्तर मिल जाना चाहिए कि संसार में कोई भी कार्य असम्भव नहीं है, अवश्य ही यह आर्य निर्माण संसार के कठिनतम कार्यों में से एक है, अवश्य ही आज के विपरीत वातावरण में किसी से दो दिन निकलवाना इतना सरल कार्य नहीं है, लेकिन यदि सरल ही होता तो आज तक न जाने कितने लोग यही कर रहे होते, क्यों लोग गुरुमंत्र देकर, जड़ पदार्थों की पूजा करवा कर, गुरु को ही तारनहार कहकर जनता को बहकाते? क्योंकि आर्य निर्माण कठिन एवं बहकाना सरल है, इसलिए सरलता खोजने वाले सरल कार्य करते हैं और जिन्हें सत्य प्रिय है, सिद्धान्त प्रिय है वे कठिनतम कार्य में भी अपने परिश्रम-पुरुषार्थ से योजनाबद्ध कार्यप्रणाली से संगठित होकर सफलता प्राप्त करते हैं। कैथल महासत्र से अनेक आर्यगणों को उत्साह है, वे भी अपने क्षेत्रों में तैयारियों में लग गये हैं, कुछ ही दिनों में और 'आर्य प्रशिक्षण महासत्रों' की घोषणा आप सभी आर्यजनों को एवं देशवासियों को अपनी 'आर्य निर्मात्री सभा' के अन्तरजाल (बेवसाइट) पर देखने-सुनने को मिलेगी।

अतः आइए अपने भीतर पुनः आशा का संचार कर इस परम पवित्र कार्य में जुट जाएं! हमारा तो उद्घोष ही है- 'जय आर्य-जय आर्यावर्त्त'।

सभी उन्नतियों का मार्ग आर्यसिद्धान्त

वैदिक ज्ञान-विज्ञान को संग्रहित किये आर्यों का द्वार सब मत-पंथ, सम्प्रदाय और उच्च व निम्न पिछड़े अंतिम वर्ग तक के व्यक्ति के लिए आदर-सम्मान के साथ सर्वथा खुले हैं क्योंकि आर्यों का उद्देश्य किसी मत-पंथ या संम्प्रदाय की स्थापना करना नहीं है। यह तो एक वैदिक सिद्धान्तों को स्थापित करने का आंदोलन है। आर्यो का उद्देश्य सब मानव जाति का उपकार करना ही है और असाधारण वैदिक ज्ञान से परिचित करा सब लोगों को बुद्धिमान, चरित्रवान, ईश्वर उपासक और राष्ट्रभक्त बनाना है। जिससे वह अपनी उन्नति के साथ-साथ उन्नति के संसाधनों का संरक्षण भी कर सकें और अधिक समय तक सुख-शान्ति से उनका उपभोग करें।

प्रायः देखने को मिलता है कि दृढ़ आर्य परिवार सभी भौतिक सुख-संसाधनों से परिपूर्ण खुशहाल होते हैं और अनुशासित भी होते हैं। कोई भी व्यक्ति यदि इस वेद मंदिर में प्रवेश करता है तो वह भी बुद्धिमान बन सफलता को जल्द ही प्राप्त कर सकता है। ये वैदिक सिद्धान्त किसी भी मुर्ख-आलसी, प्रमादी व्यसनी व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर ही ले जाते हैं, वह बस सिद्धान्तों का अनुकरण करे तो फिर से उसे अपनी नष्ट हुई यश-कीर्ति जल्द ही समाज में कई गुणा बढ़ा ले जाता है, फिर सामान्य मनुष्य की तो बात ही क्या। लेकिन दृढ़ आर्य (श्रेष्ठ) बनना कोई साधारण कार्य नहीं, इसके लिए तपस्या, परिश्रम, स्वाध्याय और यम-नियमों का प्रतिदिन पालन करके ही बौद्धिक स्तर को बढ़ाया जा सकता है अर्थात् आर्य बना जा सकता है। आर्य बनने का मूल्य भी होता है जो देना ही होता है और अनिवार्य भी है, वह है अपने सभी दुर्गुणों को अपने अधिकार में कर लेना, अर्थात् अपने मन-मस्तिष्क का स्वामी बन जाना, कुचेष्टा के सभी अवगुणों को अपने नियंत्रण में कर लेना, बुराईयों को अपनी मन-मानी न करने देना। यही मूल्य आर्य को चुकाना होता है। वह प्रतिपल-प्रतिदिन स्वयं के विचारात्मक प्रतिद्वन्दों से युद्ध करता रहता है और यह युद्ध कभी समाप्त नहीं होता, कभी स्वयं के लिए तो कभी दूसरों के लिए चलता ही रहता है। वेदविद्या का सिद्धान्त रूपी रस प्रथम तो बड़ा ही कड़वा लगता है पर सिद्धान्त व्यवहार में आ जाने के बाद अमृत तुल्य हो जाता है जो साधक को आत्मविश्वासी, साहसी, निडर और बुद्धिमान व तार्किक बना उसे आनन्द से विभोर रखता है। अब जो मन-आत्मा में ज्ञान होता है वह व्यवहार के साथ चरित्र में भी झलकता है और समाज में फैला अज्ञान-अविद्या आदि दोष साधक को साफ-साफ दिखई देने लगते हैं वह उन दोषों को जड़-मूल से उखाड़ने में प्रयासरत हो जाता है। पर याद रखना इसकी प्राप्ति का कोई छोटा मार्ग या विकल्प नहीं है, विद्या धारण करना परमावश्यक है। इस वैदिक विद्या से मिले व्यवहार को सामान्य भाषा में आर्यत्व कहते हैं और जब यह शक्ति संगठित होती है तो वह आर्यों का समाज कहलाती है, याद रखना आर्यसमाज के आदर्श ऋषि-मुनी, तपस्वी और उनकी विद्या को धारण करने वाले होते हैं। वह मर्यादा पुरुषोत्म श्री राम-कृष्ण जैसे शास्त्र व शस्त्र दोनों विद्याओं में निपुण होते हैं, जिसको जैसा चाहे वैसे उसका सामना। वह सत्य के प्रचारक और संस्थापक होते हैं। यही शिक्षा तो हमें सब मनुष्यों को देनी है। यही तो वेद भी हमें आदेश करता है- **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् सब विश्व को आर्य बनाओ, श्रेष्ठ बनाओ।

वर्तमान में आर्यों द्वारा स्थापित ही एक ऐसा संगठन है तो कि बौद्धिक विचार बढ़ाने वाला कारखाना चलाता है, ऐसा ही एक कारखाना वर्तमान में राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के द्वारा चलाया जा रहा है। इस कारखाने का उत्पाद एक आर्य व्यक्ति होता है जो कि सत्र कर लेने के पश्चात् साधारण मनुष्य से भिन्न हो जाता है, वह मानवता के कल्याण के लिए समर्पित हो जाता है। अब वह प्राणीमात्र के कल्याण के लिए प्रयासरत हो जाता है।

इसलिए आप सब आर्य बनें, न हिन्दु, न मुसलमान, न ईसाई, न सिख, न कुछ और। हम जो थे वे ही बन फिर इस धरा-पृथ्वी को स्वर्ग-वसुन्धरा बना डालें। न कोई भिन्न-भिन्न विचार हों, न जाति-पाति व उनसे उपजा द्वेष हो, सब एक विचार रखें जिससे किसी का किसी से कोई विरोध न हो, तभी हम सब विश्व को अपना परिवार बना सकेंगे। आप जानते ही हो परिवार में हर व्यक्ति, व्यक्ति का, पूरे परिवार का सहयोगी होता है, अपने व्यक्ति के दु:ख में दूसरा व्यक्ति अपने सु:ख को समर्पित कर देता है। अर्थात् उसके दु:ख को अपने सु:ख से मिलाकर समस्त दु:ख की मात्रा को भी न्यून कर लेता है। इसलिए एक आर्य त्यागी-तपस्वी बन सब तत्व-पदार्थ, गुण-कर्म, स्वभाव को सन्तुलित रखता है, सब लोकों में शांति बनाये रखता है। यही तो उस का कार्य है और इस कार्य को इस जीवन लक्ष्य को बताने वाला सही-सही दुनियाँ में वर्तमान में कोई बाबा, गुरु, पोप, मुल्ला, डेरा, आश्रम नहीं। उनका लक्ष्य तो कुछ ओर ही है, इस पर चर्चा फिर कभी। धन्यवाद!

-आर्य प्रमोद शर्मा, दिल्ली

आर्य संस्कृति को जानने का उपाय

-आचार्य सतीश

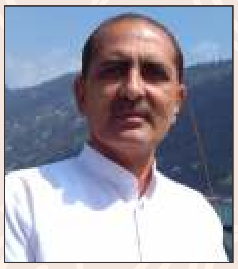

आर्य उपदेशकों, प्रचारकों, विद्वानों मंचासीनों के द्वारा बार-बार यह कहा जाता है, हम सुनते आ रहे हैं कि यज्ञ हमारी संस्कृति का प्रतीक है, यज्ञोपवित हमारी संस्कृति का प्रतीक है, शिखा हमारी संस्कृति का प्रतीक है। बार-बार यह सब हम सुनते रहते हैं, सुनाते रहते हैं, मंचों से ऐसा बोला जाता रहता है, कहते हैं यह हमारी संस्कृति है जिसका ये सब अंग है। अगर कोई पूछे कि अपनी संस्कृति का क्या अर्थ है तो कहेंगे कि हमारी संस्कृति अर्थात् वैदिक संस्कृति, आर्य संस्कृति या कहें अपने ऋषि मुनियों की संस्कृति। बल्कि अधिकांश तो यह भी नहीं कहते अपितु कहते हैं- भारतीय संस्कृति, उन्हें इसका अन्तर ही नहीं मालूम। लेकिन यहाँ इस लेख का मेरा उद्देश्य इसमें अन्तर बतलाना नहीं है अत: इसकी चर्चा तो फिर कभी करेंगे।

यहाँ तो प्रश्न यह है कि जब ये सब वैदिक या आर्य संस्कृति के प्रतीक या अंग है तो वह वैदिक या आर्य संस्कृति क्या है? ये मात्र प्रतीक हैं ये अंग हैं और क्या प्रतीक मात्र के होने से या जानने से ही संस्कृति को जाना और समझा जा सकता है, और क्या प्रतीक से ही संस्कृति का कार्य हो जाता है या काम चल जाता है।

प्रतीक से क्या होता है, क्या किया जा सकता है? इसे समझने के लिए आइए एक दृष्टान्त से समझने का प्रयास करते हैं। एक व्यक्ति को रहने के लिए घर की आवश्यकता है और उसे एक घर का चित्र मिल जाता है या वह बनवा लेता है तो वह चित्र उसके घर का प्रतीक कहलाएगा। आइए देखते हैं कि क्या उस चित्र या प्रतीक से उसके घर की आवश्यकता पूरी हो जाती है अर्थात् क्या उस प्रतीक से सुरक्षा, सुख-सुविधाएं या सर्दी-गर्मी, वर्षा आदि से उसको सुरक्षा मिल जाती है? हम सबका उत्तर हाँ नहीं होगा। क्योंकि सब जानते व समझते हैं कि घर के प्रतीक रूपी चित्र से घर का कार्य नहीं होगा। इसी प्रकार संस्कृति के प्रतीक मात्र से संस्कृति के मूल तत्वों को पूर्णतया नहीं जाना जा सकता और न ही उससे अपना हित किया जा सकता है।

तो वह आर्य या वैदिक संस्कृति क्या है। उसको जानने का एकमात्र माध्यम है शिक्षा। शिक्षा के द्वारा ही किसी विषय को ठीक से समझा जा सकता है। शिक्षा से ही संस्कृति के मूल तत्वों या सिद्धान्तों को जाना जा सकता है क्योंकि सिद्धान्तों या तत्वों की व्याख्या को समझने के लिए शिक्षा लेना व देना आवश्यक है। शिक्षा अर्थात् विद्या जब हमारे पाठ्यक्रम का हिस्सा बनती है और हम उसे विधिवत रूप से पढ़ते हैं तभी वह हमारा जीवन का अंग बन पाती है और हमारा हित कर पाती है। ये वैदिक संस्कृति के मूल तत्व व सिद्धान्त हमारे राष्ट्र में एक समय शिक्षा का हिस्सा होते थे तो हम उसे जानते थे, उन्हें अपने जीवन में अपनाते थे व उन सिद्धान्तों से अपने जीवन को सुखी बनाते थे।

लेकिन लम्बे काल से हमारी शिक्षा पद्धति से वे सिद्धान्त निकल गये और पूरे राष्ट्र में कहीं पर भी इस प्रकार की व्यवस्था नहीं जहाँ इस प्रकार के सिद्धान्तों की शिक्षा दी जाती हो। धर्म के नाम पर आध्यात्मिकता के नाम पर, समाज व राष्ट्र सेवा के नाम पर लोगों को शिक्षित करने वाले बाबागण, राजनेता, आध्यात्मिक गुरु कोई भी उस संस्कृति के मूल सिद्धान्तों की शिक्षा नहीं देता। फिर शिक्षा के पाठ्यक्रम का तो कहना ही क्या? और ऐसी स्थिति में अनेकों वर्षों तक हम अपनी वैदिक संस्कृति के प्रतीकों से ही काम चला रहे हैं और मात्र प्रतीकों से न उन्नति का पथ बनता है और न ही हमारा हित होता है। वे तो मात्र प्रतीक बनकर रह जाते हैं और इसी का यह परिणाम होता है कि युवक वैदिक या आर्य संस्कृति की तरफ आकृष्ट नहीं होता है। वह प्रतीकों से सन्तुष्ट नहीं होता है, उसके रहस्यों को, उसके पीछे के सिद्धान्तों को, उसके मूल तत्वों को जानना चाहता है। उन युवाओं को यह सब जनाने का कोई प्रकल्प इन सब के द्वारा उपलब्ध नहीं है।

वैदिक संस्कृति अर्थात् आर्य संस्कृति को जानने, आर्यों के मूल सिद्धान्तों को जानने का कार्य शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। वेद पढ़कर हो सकता है। लेकिन न तो शिक्षा पद्धति में यह है और न ही वर्तमान में वेद को पढ़ने का सर्वसुलभ मार्ग उपलब्ध है। इसी का समाधान निकाला ऋषि दयानन्द ने। इसी को आगे बढ़ा रही है राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा। सभा द्वारा आर्य निर्माण सत्रों के माध्यम से इस वैदिक या आर्य संस्कृति के मूल सिद्धान्तों की जानकारी दी जाती है। जिसका प्रतीक यज्ञ है, यज्ञोपवित है, शिखा है, गाय है। निर्मात्री सभा द्वारा तैयार इस पाठ्यक्रम के माध्यम से एक युवक प्रतीकों से आगे निकल जाता है और उन प्रतीकों के महत्व को भी समझ जाता है। वैदिक संस्कृति को जानने का सबसे सरल और उपयोगी उपाय है निर्मात्री सभा का सत्र। इस राष्ट्र के जितने अधिक लोगों तक इस सत्र का पाठ्यक्रम पहुँचेगा उतने ही अधिक व्यक्ति वेद की ओर उन्मुख होगें। वेद के बारे में लोगों की शंकाए दूर होगीं और ऋषि का संदेश **वेदों की ओर लौटो**, सार्थक होगा। वेद विद्या की ओर उन्मुख होने का, युवाओं को वेद की ओर लेकर चलने का इससे उत्तम उपाय वर्तमान में नहीं है। राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को यह पाठ्यक्रम पढ़ाया जाना चाहिए। आर्यो! आर्याओं! आप इसके महत्व को जान चुके हो। आर्य प्रचारक तो और उससे आगे के सिद्धान्त भी जान रहे हैं। अत: आप सबका तो और भी अधिक कर्तव्य बनता है और इस राष्ट्र की सुरक्षा व उन्नति तथा हम सब के उत्थान के लिए भी आवश्यक है कि यह विद्या एक-एक व्यक्ति तक पहुँचे और इसको जनाने का मार्ग आपके पास है ही। आर्यों की उन्नति केवल राष्ट्र की उन्नति के लिए है। अत: आइए हम सब पूर्ण पुरुषार्थ करते हुए एक-एक व्यक्ति तक इन सिद्धान्तों को आर्य निर्माण सत्रों के माध्यम से पहुँचाएं, जिससे लोग प्रतीकों के स्थान पर सही रूप से संस्कृति व आर्य सिद्धान्तों को जान सकें, अन्यथा तो कुछ वर्षों में संस्कृति के ये प्रतीक भी समाप्त हो जाएंगे या पूर्ण रूप से विकृत हो जाएंगे जैसा कि अनेक देशों में यह हो चुका है।

सत्र के लिए युवाओं को आह्वान

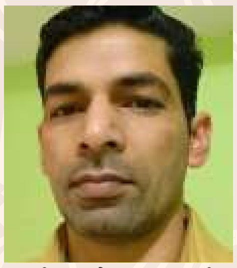

आर्य राजेश (आर्यावर्त्त)

करें जाति का हम उत्थान
चलो करें सबको आह्वान
सदाचार को जो सिखलाए
शिष्ट आचरण जो सिखलाए
जन-जन को जो आर्य बनाए
श्रेष्ठ भाव मन में भर जाए
चलो करें सबको आह्वान
सबको दें वेदों का ज्ञान

रोम-रोम में राष्ट्र भक्ति हो
मन में दृढ़ संकल्प शक्ति हो
त्याग भावना भरे हृदय में
तिल-तिल मिटने की क्षमता हो
चलो करें सबको आह्वान
हो नवयुवकों का निर्माण

झरे आर्यभाषा का झरना
पहनें स्वाभिमान का गहना
आर्य संस्कृति स्थापित करना
विश्व-गुरु का पद फिर गहना
यह हो अपना लक्ष्य महान
चलो करें सबको आह्वान

श्रेष्ठ नागरिक सब बन जाएँ
'आर्यावर्त्त' राष्ट्र कहलाए
वैदिक आभा में सुख पाए
बनें आर्य पृथ्वी संतान
हो अपना कर्तव्य महान
चलो करें सबको आह्वान

वैशाख मास का तिथि पत्र

12 अप्रैल-10 मई 2017　**वैशाख**　ऋतु- ग्रीष्म

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
		स्वाती कृष्ण प्रतिपदा 12 अप्रैल	स्वाती कृष्ण द्वितीया 13 अप्रैल	विशाखा कृष्ण तृतीया 14 अप्रैल	अनुराधा कृष्ण चतुर्थी 15 अप्रैल	ज्येष्ठा कृष्ण पंचमी 16 अप्रैल
मूल कृष्ण षष्ठी 17 अप्रैल	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण सप्तमी 18 अप्रैल	उत्तराषाढ़ा कृष्ण अष्टमी 19 अप्रैल	श्रवण कृष्ण नवमी 20 अप्रैल	धनिष्ठा कृष्ण दशमी 21 अप्रैल	शतभिषा कृष्ण एकादशी 22 अप्रैल	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण द्वादशी 23 अप्रैल
उत्तराभाद्रपदा कृष्ण त्रयोदशी 24 अप्रैल	रेवती कृष्ण चतुर्दशी 25 अप्रैल	अश्विनी कृष्ण अमावस्या 26 अप्रैल	भरणी शुक्ल प्रतिपदा 27 अप्रैल	कृतिका शुक्ल द्वितीया 28 अप्रैल	रोहिणी शुक्ल तृतीया/चतुर्थी 29 अप्रैल	मृगाशिरा शुक्ल पंचमी 30 अप्रैल
आर्द्रा/पुनर्वसु शुक्ल षष्ठी 1 मई	पुष्य शुक्ल सप्तमी 2 मई	आश्लेषा शुक्ल अष्टमी 3 मई	मघा शुक्ल नवमी 4 मई	पू० फाल्गुनी शुक्ल दशमी 5 मई	पू० फाल्गुनी शुक्ल एकादशी 6 मई	उ० फाल्गुनी शुक्ल द्वादशी 7 मई
हस्त शुक्ल त्रयोदशी 8 मई	चित्रा शुक्ल चतुर्दशी 9 मई	स्वाती शुक्ल पूर्णिमा 10 मई				

Rishi Dayanand - His Life And Work
-Early Life-

-Saroj A rya, Delhi

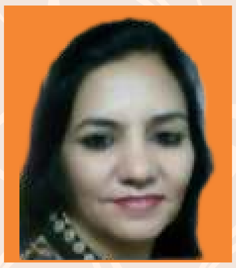

Mool Shankar once more devoted himself to his studies. He had some vague thoughts of giving up this world but they had not taken any final shape. God willed that they should. In the year 1843, when Mool Shankar was eighteen, his paternal uncle upon whom the boy had always looked as his true friends and guide had an attack of the same disease which had carried off his dear sister. His uncle was so dear to him that he always helped him in shaping up his life, to persuade his father for further study. Despite the best medical assistance there was no improvement, and the case was turned to be hopeless. Lying on his death-bed, he cast at the young lad a look so fond and wistful that Mool Shankar could not help bursting into tears. There was something angelic about that man and the thought of imminent separation from him unnerved him. He wept and wept till his eyes swelled with weeping. The inevitable happened. His uncle died and once more the house was in a State of mourning. Mool Shankar felt himself totally helpless.

This shock brought back all the bad Memories, the questions which might have calmed down with the lapse of time got a new impetus. The fire was re-kindled. Mool Shankar was obsessed with the idea of seeking escape from death felt distracted. He wanted to know truth about life and death and its mystry. Everyone to whom he turned for the solution of this tangled problem made him to understand that Moksha (salvation) could be attained by Yogabhyasa (practice of Yoga) alone. It could be learnt by leading a life of great mental discipline under the guidance of competent teachers who lived lives of seclusion in forest. It did not take Mool Shankar long to decide that this yoga must be learnt, at all costs. Even if it meant the abandonment of the joys of home and family, he would pay the heavy price. The lad was under a spell which captures all great men at times. The pleasures of life to which we cling so doggedly in spite of hundred of disillusionments, had lost all charm for him. His father somehow came to know of his intentions. In his youthful enthusiasm Mool Shankar disclosed to some of his friends what he intended to do. This was a matter of deep concern for his father who began to think of the means to keep him away from such designs. The boy was beginning to soar, he must be brought to earth, and the only and in most cases the most effective remedy was that the boy should be married. The duties or responsibilities of matrimonial life will surely cure him of all his eccentricities and bind him down to a quiet, settled household life.

To be continued...

जीन्द व सोनीपत में आर्यसद् की बैठकें

यज्ञोपवित युवाओं को धागे से बना सूत्र पहनाकर आर्य बनने का दिलाया संकल्प

मंत्रोच्चारण के बीच 800 लोगों ने धारण किए जनेऊ

200 लोग नहीं रख सके मन पर नियंत्रण

युवाओं को आर्य समाज के रास्ते पर चलने का किया आह्वान

दो दिवसीय निर्माण शिविर में भाग लेते युवा।

धर्म जीने का एक सही तरीका: जितेंद्र

850 लोगों ने धारण किया यज्ञोपवीत

हम सिर्फ आर्य, न कोई जाति न संप्रदाय

जाट तकनीकी संस्थान में दो दिवसीय आर्य सम्मेलन में आचार्यों ने वेद, ईश्वर, धर्म, देवी देवताओं के बारे में बताया

आज ये होंगे कार्यक्रम

चार राज्यों से 17 आचार्य ले रहे हैं भाग

MY City अमर उजाला

600 पुरुषों और 200 महिलाओं ने एक साथ धारण किया जनेऊ

आर्य निर्माण महा अभियान कैथल

28 जनवरी को कैथल आर्यसद् की बैठक हुई जिसमें 400 के लगभग आर्य सदों ने भाग लिया। बैठक में मुख्य आचार्य जी की प्रेरणा से सभी आर्यसदों में उर्जा का संचार हुआ। और पहले से निधारित 11-12 फरवरी के सत्र में इस उर्जा का असर भी दिखा। सत्र आचार्य योगेश जी ने लिया और पहले दिन संख्या 250 के के आस-पास थी अगले दिन 150 के लगभग। इस सत्र में संख्या के लिए सामान्य प्रयास किया गया था। यह देख कर कैथल की टीम ने निर्णय किया कि क्यों न एक महासत्र का आयोजन किया जाये और तिथि निर्धारित की गई, सभा से अनुमति लेकर 25-26 मार्च को सत्र का निर्णय किया गया। तीन टीम प्रचार के लिए निर्धारित की गई, एक टीम अमनदीप आर्य जी, दूसरी टीम संदीप आर्य जी और तीसरी जसबीर आर्य (क्योडक) जी के नेतृत्व में प्रचार कार्य में जुट गई। इसके अतिकरक्त भी सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने दिन-रात प्रयास किया। 25-26 मार्च को जाट कॉलेज में आयोजित होने वाले महासत्र के लिए 1000 सत्रार्थिओं का लक्ष्य रखा गया था। पूरे जिले की टीम ने बिना ज्यादा संसाधनों के हृदय में आर्यावर्त्त के निर्माण का सपना संजोकर सामर्थ्य से अधिक कार्य किया। 50 के लगभग गांवों में और 12 के लगभग कॉलेजों में प्रचार किया। 25 मार्च को अनुमान से अधिक 1200 के लगभग सत्रार्थियों ने सत्र में भाग लिया, जिसमें 300 के आस-पास महिलाएं थी। 80 के लगभग अलग-अलग गांवों से लोग आए।

अन्त में 800 के लगभग सत्रार्थियों ने सत्र पूरा किया। 600 से अधिक लोगों ने यज्ञोपवित धारण किया और आर्यावर्त्त निर्माण के इस महान कार्य में सहयोग का भरोसा दिलाया। इस सत्र में सत्रार्थियों द्वारा उत्साहपूर्वक भाग लिया गया और पूरे क्षेत्र में इस सत्र का बहुत ही सकारात्मक प्रभाव रहा तथा आर्यो में एक नई उर्जा का संचार हुआ।

-आचार्य जसबीर (आर्यसद् प्रमुख, कैथल)

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की देन

सभी मनुष्यों के जीवन में एक न एक दिन ऐसा समय आता है, जो उसमें और उसके परिवेश में थोड़ा या अधिक परिवर्तन अवश्य लाता है। अब चाहे वह परिवर्तन सकारात्मक दिशा देने वाला हो या नकारात्मक। जब किसी बालक का जन्म होता है तो वह केवल रोना, हंसना और सोना ही जानता है, कुछ समय बाद हम देखते हैं कि सभी का खान-पान, जीवन शैली, जीविका चलाने के ढ़ग सभी कुछ भिन्न-भिन्न हो चुका है, ऐसा क्यों? इस का एक ही उत्तर है **'शिक्षा, सिद्धान्त, विद्या'**। एक बालक के चित् पर जिस प्रकार के संस्कार उसके परिवेश व समाज द्वारा डाल दिये जाते हैं वह उसी प्रकार बनता चला जाता है।

मेरा जन्म भी एक सामान्य परिवार में हुआ, माता-पिता ने पूर्ण सामर्थ्य लगा कर पढ़ाया, अच्छी शिक्षा दी। 10वीं कक्षा के बाद विज्ञान विषय को चुना जो आध्यात्मिक, समाजिक, राष्ट्रप्रेम की शिक्षा से कोसों दूर रहा।

मन दो नावों पर सवार रहता कभी सोचता कि ईश्वर है, कभी मेरा विषय (आधुनिक विज्ञान) मुझे कहता की ऐसा कुछ नहीं है और डारविन जैसे वैज्ञानिकों के लेख ईश्वर को ना मानने पर विवश कर देते। ऐसा होते-होते मार्च 2011 आ गया व मेरे प्रेरणा स्रोत, मेरे भ्राता आर्य कुलदीप जी की प्रेरणा से निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्र में बैठा। इस सत्र के प्रारम्भ में ही एक शंका का समाधान तो तुरंत हो गया की ईश्वर है, इसमें कोई संदेह नहीं। जब दो दिन पूरे हुए तो आचार्य द्वारा दिये गए तथ्य, तर्क व वेद सिद्धान्तों ने सोचने पर विवश किया कि जो हमारे राष्ट्र में आधुनिक शिक्षा के माध्यम से परोसा जाता है वह सब पूर्ण रूप से ठीक नहीं है, जैसे हमारे पूर्वजो को बन्दर बताना, हमें गंवार, अशिक्षित, अंधविश्वासी और विज्ञान से कोसों दूर आदि-आदि।

जब अपनी शिक्षाओं, सिद्धान्तों तथा वैज्ञानिक व विज्ञान आदि के इतिहास को जाना तो पता चला कि हमारी शिक्षाओं, सिद्धान्तों व विज्ञान का तो सारे संसार भर में अब भी कोई बराबरी करने वाला नहीं है। हम श्रेष्ठ थे, हैं और रहेंगे।

मेरी सभी युवाओं से प्रार्थना है कि अपने वेद की शिक्षाओं के ज्ञान को घर का जोगी न समझें। एक बात मैं पूर्णत: स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि जितना भी सत्य ज्ञान, सिद्धान्त व विज्ञान इस संसार में फैला है उसका मूल वेदों में है और यहीं से फैला है, इस मानव जाति का कल्याण यदि कहीं से होगा तो वह है 'वेद मार्ग' और वर्तमान में यदि कोई एकमात्र संस्था हमें वेदों के उस महान, श्रेष्ठ, सत्य, नित्य, पवित्र, वैज्ञानिक और तार्किक ज्ञान से जोड़ रही है, सिखा रही है, हमें स्वाभिमानी व श्रेष्ठ (आर्य) बना रही है तो वह है राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा।

अत: हमें अपने जीवन का अमूल्य समय इस पवित्र संस्था का उन्नत व्याख्यान राष्ट्र के कोने-कोने में व्यापक करने में अवश्य ही लगाना चाहिए ताकि पुन: यह राष्ट्र विश्व गुरु बने, पुन: हम विश्व में शान्ति स्थापित कर सकें, पुन: प्राणीमात्र को सु:ख प्रदान कर सकें और यदि हम ऐसा न कर पाये तो राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार वह दिन दूर नहीं जब हम फिर से आक्रान्ताओं व मलेच्छों की पराधीनता के दंश से ग्रस्त होगें।

पुन: आप सभी से प्रार्थना है कि छोटे-छोटे स्वार्थों को भूल कर आर्यकरण के कार्य में लग जाएं और अपने श्रेष्ठ पूर्वजों की परम्पराओं, सिद्धान्तों व शिक्षाओं को पुन: स्थापित करें। धन्यवाद!

-आर्य कप्तान, राष्ट्रीय महासचिव, राष्ट्रीय आर्य छात्रसभा

चाह नहीं मंचों पर माला पहनकर इठलाऊं।
चाह नहीं केसरिया पट्टी पहन सेल्फी खिचवाऊं।
चाह नहीं चाटुकारिता कर दक्षिणा ले जीवन चलाऊं।

चाह यही कोटि-कोटि जन को आर्य बना जाऊं।
चाह यही सारे देश को आर्यावर्त्त कहते सुन पाऊं।
चाह यही कोने-कोने में सत्यार्थ प्रकाश फैलाऊं।

-आचार्य अशोक पाल

कुछ हैं आर्य-दिन रात स्वाभिमानपूर्वक
बिना मान-अपमान की चिन्ता के आर्यकरण करते हैं।

कुछ हैं स्वयंभू आर्य अर्थात् सेल्फी आर्य- परजीवी बन
दिन-रात अपनी यात्राओं का सेल्फीकरण करते रहते हैं।
आप कौन से आर्य बनना पसन्द करोगे?
आर्य अथवा सेल्फी आर्य?

-आचार्य अशोक पाल

-ऋषि दयानन्द का संदेश-

समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	11 अप्रैल	दिन-मंगलवार	मास-चैत्र	ऋतु-वसंत	नक्षत्र-चित्रा
अमावस्या	26 अप्रैल	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-अश्विनी
पूर्णिमा	10 मई	दिन-बुधवार	मास-वैशाख	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-स्वाती
अमावस्या	25 मई	दिन-गुरुवार	मास-ज्येष्ठ	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-कृतिका

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

सत्र का अनुभव प्रेरणादायक। ईश्वर के बारे में जाना-समझा और पहचाना। जिस ईश्वर को ढूंढ़ने के लिए मैं बार-बार प्रयत्न कर रही थी उस ईश्वर का कुछ अंश मुझे इस सत्र में प्राप्त हुए। मूर्ति पूजा ही अवेहलना तो मैं पहले से ही करती थी। लेकिन ईश्वर के प्रति मेरी मान्यता थी कि ईश्वर है और मेरी यह मान्यता यहाँ पुख्ता भी हुई। मैं नारी जाति का उद्धार करने का प्रयत्न सदा ही करती रही हूँ। बुराईयाँ हमारे शरीर को कितना खोखला कर देती हैं, इस विषय में जाना। अपने पूर्व की शक्ति, ऊर्जा, सामर्थ्य को जाना और आने वाले सत्र में यही शक्ति मैं अपने अन्दर, अपनी आने वाली सन्तानों के अन्दर पैदा करने की कोशिश करुंगी। कोशिश ही नहीं बल्कि उन्हें आर्य ही बना दूंगी।

नाम : मंजू, आयु : 37 वर्ष, व्यवसाय : अध्यापक, योग्यता: एम.ए, पता : जाखोली कैथल, हरियाणा

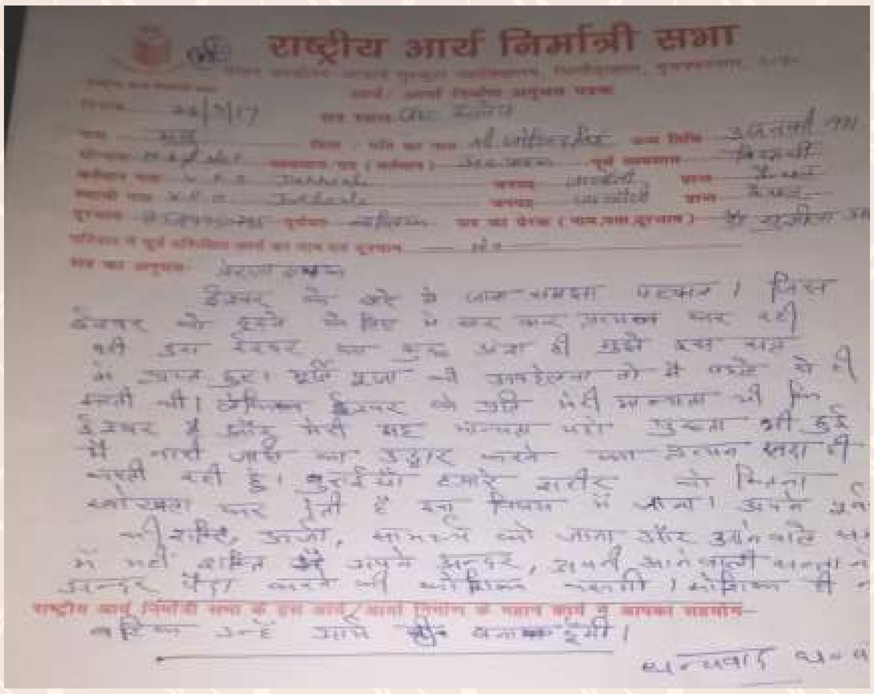
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

मुझे सत्र करने से पूर्व न तो धर्म का ठीक-ठीक पता था, न अपने मत का पता था, भ्रमित थे। सत्र करने पर धर्म का ज्ञान हुआ। उपासना, संध्या आदि सीखे।

सत्र में राष्ट्रभक्ति, व्यसन मुक्ति के बारे में बताया गया जो कि एक अलग अनुभव था। अंधविश्वास का निवारण भी हुआ। परमात्मा, आत्मा धर्म आदि का ज्ञान हुआ। आर्य प्रशिक्षण सत्र से व्यक्ति निर्माण होता है। ऐसी शिक्षा कहीं भी नहीं मिलती है। यह दो दिन का लघु गुरुकुल है। यह सभी भारतीयों को करना चाहिए। जो भी आदेश होगा वहीं कार्य करने हेतु तत्पर।

नाम: सुबोध कांत, आयु : 23वर्ष, योग्यता : एम.ए., पता : तुकरियासर, तह. श्रीडुंगरगढ़, बीकानेर, राजस्थान

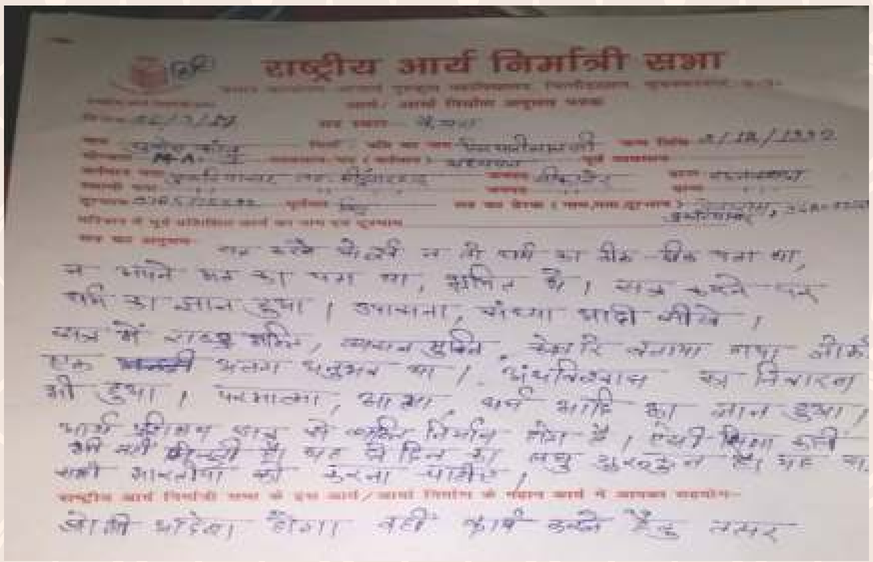
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

सर्वप्रथम अपनी स्वयं की पहचान हुई, आत्मा और ईश्वर की पहचान हुई। धर्म और राष्ट्र के अर्थ, उसके प्रति अपने कर्तव्यों की गहराई से पता चला। राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका पर चिन्तन किया कि इस देश में आज तक हमने क्या किया है? सबसे बड़ी बात इतिहास की गहरी जानकारी मिली जो आज हमें आधुनिक शिक्षा नहीं दे सकी, वो सभी कुछ आदरणीय आचार्यों से सीखने को मिला। अपनी अज्ञानताओं के अन्धकार से बाहर निकलने का अवसर मिला। समाज और राष्ट्र निर्माण के पूर्व अधूरे विचारों को सही मार्गदर्शन मिलना खुशी की बात है। जय आर्य जय आर्यावर्त्त। तन-मन-धन से सेवा करने को तैयार।

नाम: प्रवीन कुमार, आयु : 36 वर्ष, योग्यता : एम.ए.,बी.एड., एम.एड., यू.जी.सी., नेट, कार्य : अध्यापन, पता: गाँव बात्ता, कैथल, हरियाणा

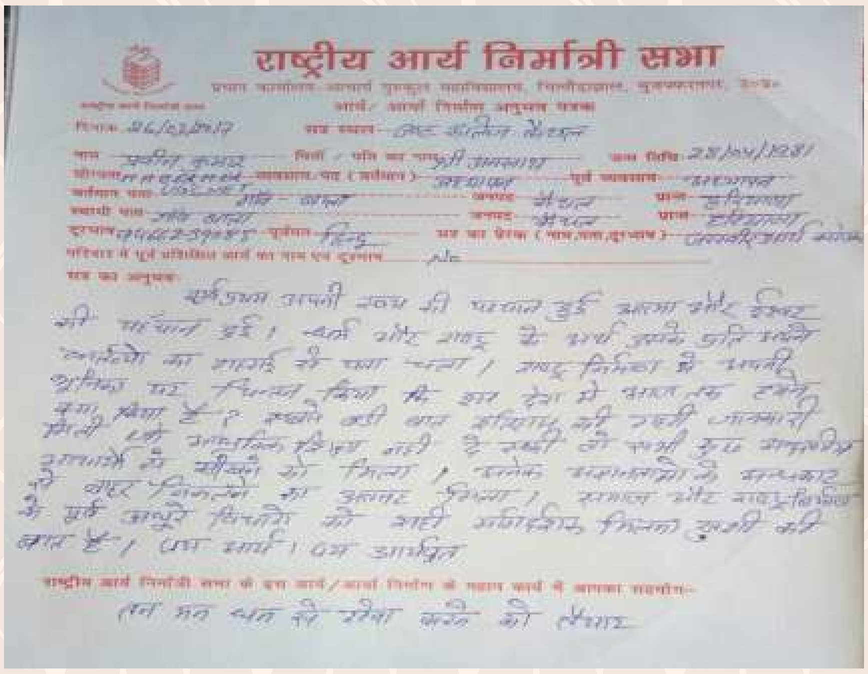
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

संध्या काल

वैशाख मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(12 अप्रैल 2017 से 10 मई 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 45 मिनट से (5.45 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

ज्येष्ठ मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5118, वि. 2074
(11 मई 2017 से 09 जून 2017)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से (7.15 P.M.)

आर्या उपदेशिका कक्षा (कैथल, हरियाणा) में उपदेशिकाएं व आचार्या डॉ. सुशीला जी

गुरुकुल टटेसर जौन्ती, दिल्ली के हीरक जयन्ती समारोह में छात्रों का प्रदर्शन

आर्य निर्माणशाला में आर्य निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।